F-17

18

2.3.1

हिंदी 12.12.06

PART III

Selections from the Bhojpuri Dialect

Conversations, Fables,

Bhojpuri Songs

from G.A. Grierson, *Seven Grammars of the Dialects and Subdialects of the Bihari Language* (Calcutta, 1884), Part II, Appendix I

A Concise Encyclopaedia of North Indian peasant life

Edited: prof. Shahid Amin.

दूसरी बात

कंगाल का पूछना और अतीथ का उत्तर देना

एक कंगाल ने किसी पहुँचे हुए अतीथ से पूछा कि मैं तो भूखों मरूं और मेरा पड़ोसी गद्दी तकिये पर पड़ा लोट मारे। रात दिन चैन करे। उसमें कौन सा गुन है जो दाता ने उसको निहाल किया और मुझको कंगाल किया। यह सुनकर अतीथ ने उत्तर दिया बाबा तुमने यह नहीं सुना है–

राम भरोखे बैठ कर सबका गुजरा ले।
जैसी जिस्की चाकरी वैसा ही भर दे ॥

FABLE II

The Beggar's Question and the Pilgrim's Answer

A Beggar once asked a certain pilgrim, who had come to him, saying, 'I am dying of hunger, and my neighbour lies upon pillows and cushions and night and day lives at ease. What are his virtues that the Giver has blessed him and made me a beggar?' When the pilgrim heard this he replied, 'Sir, have you not heard this?—

Rám sitteth at an upper window and taketh cognisance of all,
and as each one's service is so he payeth him.'

तीसर बात

देस बिदेस फिर०ला के लाभ

केहू भल अदिमी कौनो बाबा जी सेँ पुछ०लेन के, महाराज जी, रवाँ देस देस गाँवे गाँव फिर०ला सेँ का मीलेला। एक ठाईँ बइस के राम राम काहे नाँ कहीँ। कौनो मठिआ मेँ बइस के पर०मेसर के गुन काहे ना गाईँ। बाबा जी कह०लन, बाबा, ई साँच ह०, बाकि ई कहाउत तूँ नाँ सुन०ल० ह०, बहत पानी साफ रहेला जमल पानी गमक जाला । साधू लोग के फिर०ले चलल अच्छा ह०, जे मेँ उन के दाग नाँ लागे।।

तीसरी बात

देस परदेस फिरने के लाभ

किसी भलमानस ने एक गुसाई से कहा। महाराज देस देस और गांव गांव भटकने से क्या लाभ है। एक जगह रहकर साईं में लौ क्यों नहीं लगाते। और किसी मठ में बैठ कर दाता का गुन क्यों नहीं गाते। जोगी ने कहा बाबा यह सब सच है पर तुमने यह कहावत नहीं सुनी है–

बहता पानी निर्मला बंधा गंदा होय।
साधू जन रमते भले दाग न लागे कोय॥

बाकि सच पूछीं, त० हम०रा ई डर बा, कत०हीँ पानी का लहर का धक्का सें अप०ने का पास ना जारहीँ; काहे के अप०ना फरक रह०लीं, तो ऐसे ही हिलत झूलत कत० हूँ तीर पर जा पहुँचब; बाकि जौं अप०ने सें भेंट भइल, आउर कत०हूँ भूल से ठोकर लग गइल, तो हमार पेट फाट जाई। सच बा, बड़न सें आस रक्खीं, बाकि लगे ना जाई।।

आठवीं बात

मिट्टी और पीतल के घड़े की बातचीत

एक बार कहीं नदी चढ़ी तो एक पीतल का घड़ा और एक मिट्टी का घड़ा बह चले। पीतल के घड़े ने मिट्टी के घड़े से कहा कि हमारे साथ लगे चलो हम तुम को बचा लेंगे। मिट्टी का घड़ा बोला आपने बहुत अच्छी बात कही। मैं आपका भला मानूंगा और सदा गुन गाऊँगा। पर सच पूछो तो मुझे यह डर है कि कहीं पानी की लहर के धक्के से आप के पास न जा रहूँ। क्योंकि जो आप से दूर रहा तो यों ही हालता [हिलता] झुलता कहीं तीर पर जा लगूंगा। पर यदि आप से भेंट हुई और कहीं भूले से टक्कर लग गई तो मेरा पेट फट जाएगा। सच है–

बड़ों से आस रखे पर पास न जाय।

FABLE VIII

A Conversation of the Earthen and Brass Pitchers

Once upon a time somewhere a river rose, and an earthen pitcher and a brass one were floated away. The brass pitcher said to the earthen, 'Come along close by me and I'll take care of you.' The earthen said, 'The words which you have spoken are exellent, and I shall always be grateful to you and sing your praises for them; but if you ask the truth, (I must confess to) this fear that from the motion of the waves I may perchance be knocked against you. Now, if I remain apart from you, while I am thus washed hither and thither I will reach the bank somewhere; but if I meet you, and anywhere accidentally knock against you, my belly will be burst.' True it is—

'Hope in the great, but go not near them.'

नवईं बात

एगो मुन०सी बजार में बइसल चिट्ठी लीखत रहस। एगो पर०देसी अइले, आउर कह०ले, मुनन्सी जी, का लीखत बानीं। मुन०सी जी जवाब दिह०ले के, भाई, चिट्ठी लीख०तानीं। तब ऊ कह०ले के, हम०रो सलाम लीख दीहल जाई। मुन०सी जी कह०ले के नाहीं जी, अर०जी लीखत बानीं, तब ऊ कह०ले के, हम०रो सही कर दीं। मुनन्सी जी अगुता के कह०ले के, तमरसुक लीख०तानीं, तब ऊ कह०ले के, हमार गोवाही लीख दीं। मुन०सी जी, बिचार कइलन, ई त० केहू अजब ढंग के अदिमी देखाइ देत बाड़। पुछ०ले के, अप०ने के नाम का ह०। तब ऊ हँस०ले, आउर कह०ले के, हमार नाम ईहे ह०, मान चाहे मत मान, हम तोहार मेह०मान।।

॥ ४ ॥ बारह मास ॥

(*Metre:* 6 + 4 + 4, + 6 + 4 + 1, *twice* = 50 *instants.*)

चन्दन रगरौं सोहासित हो, गूँधो फूल के हार।
इंगुर मँगियाँ भरइतौं हो, सुभ के मास असाड ॥ ॥१॥
साँवन अति दुख पाबन हो, दुख सहलो नहिं जाय।
इहो दुख परे ओहि कुबरी हो, जिन कन्त रखले लोभाय ॥ ॥२॥
भादौं रैनि भयाबन हो, गरजे मेह घहराय।
बिजलि चमक जियरा ललचे हो, केकरा सरन उठ जाय ॥ ॥३॥
कुँआर कुसल नहिं पाऔं हो, ना केऊ आवें ना जाय।
पतियां मैं लिख लिख पठबौं हो, दीहै कन्त का हाथ ॥ ॥४॥
कातिक पूरन मासी हो, सभ सखि गंगा नहाय।
गंगा नहाय लट झूखे हो. राधा मन पछताय ॥ ॥५॥
अगहन ठाढ़ि अँगनवा हो, पहिरौं आगरा के चीर।
इहो चीर भेजे मोर बलमुआ हो, जीए लाख बरीस ॥ ॥६॥
पूसहि पाला पर गैल हो, जाड़ा जोर बुझाय।
नौ मन रुइया भरइतौं हो, बिनु सैंयाँ जाड़ो न० जाय ॥ ॥७॥
माधहि के शिव तेरस हो, शिव बर होए तोहार।
फिर फिर चितबौं मँदिरवा हो, बिनु पिया भबन उदास ॥ ॥८॥
फागुन पूरन मासी हो, सभ सखि खेलत फाग।
राधा के हाथ पिचकारी हो, भर भर मारेलि गुलाल ॥ ॥६॥
चैत फूलें बन टेसू हो जब के टुण्ड हहराय।
फूलत बेला गुलबवा हो. पिया बिनु मोहि न० सोहाय ॥ ॥१०॥
बैसाखहि बसवा कटइतौं हो, रच के बँगला छँवाय।
ताहि मैं सोइतै बलमुआ हो, करतौं अचरनवें आड ॥ ॥११॥
जेठ तबे मिरग हवा हो, बहे पबन हाहाय।
भरथरि गावे बारह मासा हो, पूजे मन के आस ॥ ॥१२॥

A Song of the Twelve Months

1. Gladly would I rub sandal paste upon my body and weave a garland of flowers. The parting of my hair would I have rubbed with vermilion in the happy month of Asárh.

The Same

Refrain—*O friends! let us come to the dense orchard*[42] *of the gardener*

1. Plucking, plucking flowers, I filled my basket.
2. The watchman of my father came up.
3. 'O gardener's son ! hear me. I am small[43] and of tender age.
4. 'When I go to my husband's house, this garden[44] will be like a dream to me.'

॥ १२ ॥ चैतार ॥

(*Metre:* 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants, with refrain* हो राम *which sometimes forms part of the metre and sometimes not.*)

ननदि अँगनवा चनन गाछ बिरवा। हो राम।
ताहि चढ़ि बोले बन कगवा, हो रामा॥ ॥१॥
"देबउ रे कगवा रे दूध भात कवरवा। हो राम।
मोरा पिया के सुधि बताइ दें, हो रामा" ॥ ॥२॥
"पिया पिया जनि करू पिया के सोहागिनि। हो राम।
तोरो पिया लुभुधल बारि तमोरिनि ॥हो रामा" ॥ ॥३॥
"कैसन हइक रे देसवा मुलुकवा। हो राम।
कैसन हइक रे बारि तमोरिनि ॥हो राम" ॥ ॥४॥
"अँगिया के पातर अरे मुख ढुरहुर । हो रामा।
केसियन भौंरा गूँजरि गैल रामा" ॥ ॥५॥
"धोरबौं मुहुरवा अरे बिख खाइब। हो राम।
मोररा आमे उड़रि के कैल बड़इया ॥ हो राम" ॥ ॥६॥
दास बुलाकि समैया घाँटो गावल। हो राम।
(गाइ रे गाइ)
बिरहिन सखि समुझावल, हो रामा॥ ॥७॥

[42] बगिया the long form of बाग 'a garden', usually means 'an orchard'.
[43] हारा means 'small' (of a person).
[44] बरिया is long form of बारी, 'a garden'.

The Same

Refrain—*Ah Rám!*

1. In my sister-in-law's yard is there a sandal-tree,[45] and upon it sits and caws a forest crow.

2. "I will give thee, O crow! a morsel of milk and rice if thou wilt give me news about my love."

3. "Sweetheart of thy beloved! say not 'beloved, beloved,' for thy beloved also hath fallen captive to a young *tamorin*."[46]

4. "Alas ! what is that country and that land like, and what the young *tamorin*?"

5. "Her body is delicate and her face is fair, and bumble bees keep humming round her hair (so sweet is it)."

6. "Poison[47] will I pound, and venom will I eat, for he hath set that wanton before me."

7. Dás Bulaki sang this ghâto at a fit season, singing it, singing it, and her friends consoled the deserted one.

॥ १३ ॥ चैतार ॥

(*Metre*: 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2, *with refrain* हो रामा.)

ननदि के अँगना चनन घन गछिया। हो रामा।
तहि चढ़ि बोलेला कगवा छुलच्छन ॥ हो रामा ॥ ॥१॥
"देबउ रे कगवा, दूध भात दोनिया। ॥हो रामा ॥
खबरि ना ला दे बालम परदेसिया" ॥हो रामा ॥ ॥२॥
"पिया पी जनि करू, पिया के सोहागिनि। हो रामा।
तोर पिया अरुझल बारि बंगालिनि" ॥हो रामा ॥ ॥३॥
"तोहि पूछौं कागा अजगुत बतिया ॥हो रामा ॥ ॥
कौना रूपैं सुन्दरि बारि बंगालिनि" ॥हो रामा ॥ ॥४॥
"डँडवा के पातर अरे मुख ढुरहुर। हो रामा।
केसियन मैं भँवरवा गुँजारल" ॥हो रामा ॥ ॥५॥
"काढ़ि रे कटरिया अपन जिया मारितौं। हो रामा।
उढ़रि के करेले अति से बखनवा" ॥ हो रामा ॥ ॥६॥

[45] गाछ and बीरा (long form बिरवा) both mean 'tree'.
[46] A woman who sells betelleaves.
[47] मुहुर [माहुर] is 'poison'. ✓घोर means 'pound'.

॥ १५ ॥ चैतार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 *instants.)*

(Refrain: 4 + 4 + 4 = 12 *instants.)*

Refrain—ननदि सैंया नहिं आवे।।

अँमवा मँजरि गैले, लगलें टिकोरवा।
डाल पता झुकि मतवलवा॥ ॥१॥
चोलिया से जोबना बड़ भैलि ननदि।
कैसे करि के छिपाओं॥ ॥२॥

The Same

Refrain—*O sister-in-law ! my lord comes not*

1. The mango-trees are in blossom, and the young mangoes are forming: the branches and leaves hang down as if they were intoxicated.

2. (The fullness of) my youth cannot be contained within my bodice: how can I conceal it?

॥ १६ ॥ चैतार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 *instants.)*

भावे नाहीं मोहि भवनवाँ।
हो रामा, बिदेस गवनवाँ॥ ॥१॥
जौं एह मास निरास मिलन भए।
सुन्दर प्रान गवनवाँ॥ ॥२॥
केसो दास गावे निरगुनवाँ।
ठाढ़ि गौरि करे गुनबनवाँ॥ ॥४॥

1850ई० के आस-पास

The Same

1. Ah Rám ! on (my[49] husband's) going abroad, my home did not please me.

2. If this month I become[50] hopeless of meeting him again, my beautiful life will depart.

[49] Lengthened from मोहि for sake of metre.
[50] Old form of होए.

3. Keso Dás, the unworthy, says, "The fair one stands as she utters his praises".[51]

॥ १७ ॥ चैतार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2 x 2 = 32 *instants.)*

नइ रे नवेलि अलबेलि बौराही।
उधकत उधकत चललि अँगनवाँ ॥ ॥१॥
खन आँगन खन बाहर ठाढ़ि रे।
जोहे लागे जोहे लागे सैंयाँ के अवनवाँ ॥ ॥२॥
जिन्हि मोरा कहे रामा सैंयाँ के अवनवाँ।
ननदि हो तिन्हि देबों कंचन कँगनवाँ ॥ ॥३॥

The Same

1. A fresh, young, and coquettish maiden, yet mad with love, walking at random,[52] went into the courtyard.

2. Sometimes she stands in the court and sometimes outside, and begins to watch, to watch, for the coming of her lord.

3. "O sister-in-law! to him who tells me (Ah Rám!) of the coming of my lord, will I give a golden bracelet."

॥ १८ ॥ चैतार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 +2 + 6 x 2 = 44 *instants.)*

देवरा चौरा रे लुटल० जोबनवा, हो रामा ॥
गरमि का करसमास सुतलौं अँगनवा, हो रामा ॥ ॥१॥
नान्ही से मैं पोसलौं देवरवा, हो रामा।
दुधवा पियउलौं से ओ देवरवा, हो रामा ॥ ॥२॥
लुलुहा कटइतौं फँसिया दिअइतौं, हो रामा।
जोहूँ घरवा रे रहित बलमुआ, हो रामा ॥ ॥३॥

[51] गुनबन is said to mean 'praises', 'a telling of virtues'. It is a corruption of गनन, lit. a 'counting', 'an appraisement'.

[52] उधकल is literally 'to jump'.

ई दुनु नैन बनारस अटके।
सैंयाँ जहानाबद हो॥ ॥२॥
तलवा में चमकेला चल्हवा मछरिया ।
रनवा चमके तरुवार हो॥ ॥३॥
सभवा में चमकेला सैंयाँ के पगरिया।
सजिया पै टिकुलि हमार हो॥ ॥४॥

The Same

Refrain—*O my lord! often goest thou to the East to trade:*
how can the days and nights be passed?

1. The cart gets stopped in the muddy plain, and the bullocks in Gujrat.

2. My two eyes (i.e. myself) stopped in Banaras, while my husband was in Jahanabad.

3. As the Chalh'wa fish shines in the lake, and as the sword shines in the battle,

4. So shines the turban of my lord in the assembly and the spangle (of my forehead) on the bed.

॥ २२ ॥ जतसार ॥

(Metre: (6 + 4 + 2) x 4, + 4 + 4 + 4 = 60 *instants.)*
(Refrain: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 *instants.)*

Refrain पिया बटिया जोहत दिन गैलो[59]। तोरि खबरिया न पाइलो।

केसिया अपने गुँधाईला
मँगिये सेँदुर भराईला।
पिया के सुरतिया लाईला।
जियरा हमर रुँधेला[60]
नैनन निरया ढर गैलो॥ ॥१॥
बाह्मन के बेदा बोलाईला।
पोथियां ओकर खोलाईला।

[59] गैलो, पाइलो, and भैलो, are altered from गैल, पाईला, and भैल [see lines 1, 7 and 14] respectively for the sake of rhyme.

[60] In रुँधेला, सुनावेला, and आवेला [see lines 3,6 and 9] the penultimate has been lengthened for the sake of metre.

साँचे सगुन सुनावेला।
पीवा नैखे आईला।
जोबन हमर बड़ भैलो॥ ॥२॥
नौआ के छौंड़ा बोलाईला।
पूरूब देसा पठाईला।
उत्तर भै के आवेला।
दखिन सुरत लगाईला।
पच्छिम घरे घरे ढुँढलौं॥ ॥३॥
गुरू तुकुन मनाईला।
साजन घरवा आईला।
खुब खुब भोज बनाईला।
साजन के जैंवाईला।
राम मदारि गाईला।
लोगन के सुनाईला[61] ।
दुसमन सार जर गैलो॥ ॥४॥

The Same

Refrain—*My beloved, watching for thee,*[62] *the day has sped, nor I get news of thee.*

1. (Daily) do I tie up my hair and lay vermilion on its parting. I bring thee to my memory, but my soul is disappointed, and tears flowed from my eyes.

2. I call[63] a bráhman and make him open his books. He tells me some good (*lit.* true) omen, but my beloved comes not, while my youthful form[64] is growing.

3. I called the barber's son and sent him to the East country. He comes home by the north, while I seek through[65] the south and search in every house in the west.

4. I invoke Tukun, my preceptor. My good man comes home. Excellent food am I preparing that I may feed him withal. Rám Madári sang this, and told it to the people, while her enemy's soul is burnt up (with envy).

[61] In सूनाईला [see line 13] the first syllable has been lengthened for the sake of metre.
[62] *Literally*, 'watching the way', a common idiom. बटिया is long form of बाट (*fem*), 'a road'.
[63] *Lit.* 'I call the holy books (Vedas) of the brahman.'
[64] *Lit.*, 'youth'. [जोबन हमर बड़ भैलो.] The word is usually applied, as here, to a young girl becoming *apta viro.* Of. song 18, line 1.
[65] *Lit.*, 'apply my memory'.

॥ २३ ॥ जतसार ॥

(Metre: (6 + 4 + 2) x 4, + 4 + 4 + 4 = 60 instants.)

(Metre: founded on 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 instants, but very irregular.)

"सभ के नगरिया (चुरिला)[66] बँसिया बजावे राम।
हमरा नगरिया काहे ना बजावहु (रे की)" ॥ ॥१॥
"कैसे बजाईं (रानी) रौरि नगरिया रे।
कुकुरवा भूँकेला पहरू जागेला (रे की)" ॥ ॥२॥
"कुकुरा के देबौं (चुरिला) दूध भात खोरिया रे।
पहरू के मद में मतइबौं रे की" ॥ ॥३॥
"आधि रात अगिलि (ए रामा) पहर रात पिछलि रे।
दुआरा पै चुरिला रसिया ठाढ़े (रे की)" ॥ ॥४॥
"खोलू खोलू खोलू रानी संकरि केवरिया रे।
आइ गैले चुरिला रसिया रे की" ॥ ॥५॥
"कैसे में खोलौं रे (चुरिला) संकरि केवरिया रे।
अँचरा पै सूते राजा कूँवर (रे की)" ॥ ॥६॥
"तोहरा जे पास रानी सुबरन छूरिया रे।
अँचरा कलपि चलि आवहु रे की" ॥ ॥७॥
"अँचरा कलपत (चुरिला) बड़ निक लागे रामा।
मुँहवाँ देखत छतिया फाटेला (रे की)" ॥ ॥८॥
"एक कोस अइलौं (चुरिला) दुइ कोस आइलौं रे।
चलत चलत पैयाँ मोर थाकल (रे की)" ॥ ॥९॥
"चलहू चलहू (हे रानी) थोर केत रतिया रे
उहत जे लोके मोर धवरेहर (रे की)" ॥ ॥१०॥
"सूरज जे उगले (चुरिला) मुख चटपटवा रे।
गोड़वा चलत चंलबज्जर रे की" ॥ ॥११॥
"बाट बटोहिया रे तुहुँ मोर भैया हव०।
देखल० कतहुँ तूँ चरिला धवरेहर (रे की)" ॥ ॥१२॥
"नाहिं हम देखलीं (हे बहिनि) कि नहिं हम सुनलौं हो।
कहवाँ तू सुनलू चुरिला धवरेहर (रे की)" ॥ ॥१३॥

fo

for us, in brackets, do not form part of the metre.

"देखलौं मैं देखलौं (ए बहिनि) हाजीपुर डिहवा रे ।
चुरिला के मैया सुअरि चरावेला (रे की)" ॥ ॥१४॥
"जौं हम जानितो (चुरिला) जात के दुसधवा रे।
बाबा के नगरिया फँसिया दिअइतीँ (रे की)" ॥ ॥ १५॥
"लट पट पगिया (चुरिला) लाँकीँ लाँकीँ केसिया रे।
गैरि सुरतिया हम भूलि गैलों (रे की)" ॥ ॥ १६ ॥
"साथहीँ मैं खइलो (हें रानी) साथहीँ मैं सुतलौं हो।
अब कैसे जातिया तोर मेराइब (रे की)" ॥ ॥ १७॥

The Same

1. "O Churilá! You play the flute in all the towns: why do you not in ours?"

2. "How can I play, fair lady, in your town? For the dogs bark there and the watchmen is vigilant."

3. "O Churilá! I will give the dogs a dish[67] of rice and milk, and the watchman will I make drunk with wine."

4. "When the first half of the night had passed and the first quarter of the second half had commenced, my lover Churilá stood by the door.[22]

5. "Open, open, fair lady, the narrow door: Churilá, thy gallant lover, has come."

6. "O Churilá! How can I open the narrow door? The prince (my husband) is sleeping on the border of my garment."

7. "Fair lady, you have a golden knife. Cut the cloth and come with me."

8. "O Churilá! As I cut the border it seems very pleasant to me, but when I look on (my husband's) face, my heart is bursting."

9. "O Churilá! We have come one kos,—we have come two: with continued walking my legs are weary."

10. "Fair lady, come on, come on; but little[68] of the night remains. My palace is but yonder."[69]

11. "O Churilá! The sun is risen, and my mouth is dry and my legs fail[70] me through weariness."

12. "O wayfarer on the way! Thou art my brother. Have you seen anywhere Churilá's palace?"

[67] खोरिया is a kind of small pot.
[68] *Lit.* 'how much': hence, 'how little'.
[69] *Lit.* 'that which appears (लोके) [लौके] there (उहत) is my palace'.
[70] *Lit.* 'are heavy in going'.

हे अम्बिका तुम बूझ करह अब।
अचरा उढ़ाई गोहरावत बा॥ ॥८॥

A Jhúmar
(A kind of song sung by women)

1. See how this black-faced one beats me, abuses me, beats me.

2. I cleaned up (*lit.* made) the courtyard and brought water, and still he chides me.

3. Thus does he regard, O mother! my co-wife, while he makes out evil (against) me.

4. I am not a thief nor a glutton, still he reproaches me falsely.

5. He beats me like seven donkeys, and drags me about as if I were a pig.

6. See, O my neighbours ! how he abuses me for no fault.[72]

7. My stupid husband does not understand what I say, and keeps trying to set water on fire.

8. O Ambiká! understand that he is blaming me openly.[73]

॥ २५ ॥ झूमर ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants.)*

अपना पिया के मैं खोजे ला निकसौं।
पैन्हि लेलौं रंग लाल चुनरइया॥ ॥१॥
गोकुल खोजलौं बिन्द्राबन खोजलौं।
खोजि ऐलौं हम कासि नगरइया॥ ॥२॥
जंगल खोजलौं पहाड़न खोजलौं।
कतहिं न० मिले मोर पिया के खबरिया॥ ॥३॥
अम्बिका पिया के घरहि मैं पाई।
मिलि गैले रे मन माहाने सुरतिया॥ ॥४॥

The Same

1. I put on a red cloth[74] and went to search for my husband.

2. I searched for him in Gokul, I searched for him in Brindában, and returned after searching for him Kásí (Banáras).

[72] *Lit.*' makes a donkey mount upon a cow', a proverbial idiom.
[73] *Lit.* 'spreading out his garments'.
[74] चुनरइय is an irregular long form of चुँदरि or चुनरि 'a woman's cloth', usually with coloured border.

3. I searched for him in the forest, I searched for him in the mountains, but nowhere could I find news of my husband.

4. O Ambiká! I found my husband even in my house, and I obtained soul-entrancing delights.

॥ २६ ॥ झूमर ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 3 = 27 *instants.)*

कवना गुनहि ए चुकलौं ए बालम।
तोर नयना रतनार ॥ ॥१॥
सौति के बतियाँ करेजवा मैं साले।
काँपत जियरा हमार ॥ ॥२॥
अपना पिया लागि पेन्हलौं चुँदरिया।
ताकत देवरा हमार ॥ ॥३॥
अम्बिका प्रसाद पिया हँसि हँसि बोलिहैं।
करबौं मैं सोरहो सिंगार ॥ ॥४॥

The Same

1. In what fault have I been wrong, beloved, for thine eyes are red?

2. The words of my co-wife pierce me to my liver: my soul is trembling.

3. I put on a bordered cloth[75] for my husband, and my brother-in-law[76] is gazing at me.

4. O Ambiká Prasád ! when my husband will speak smilingly, I will adorn myself with the sixteen graces.

॥ २७ ॥ झूमर ॥

(Metre very irregular, founded on 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants.)*

भैले भिनुसरवा बोलेला कोअलिया।
ऊठि साँवरि अँगनवा बुहारे। गे गोरियो ॥ ॥१॥
अँगना बुहारते टुटलैं बढ़निया।
बढ़नि के बड़ दुख भइल गे गोरियो ॥ ॥२॥

[75] See last song.
[76] See note 53.

अँगना धोरिये सास गरिया मारे।
बाबा खौंखि भैया खौखि पुतहु बहोरिया। गे गोरियो ॥ ॥३॥
बढ़नि कारने उदबासलि गे गोरियो।
बाट रे बटोहिया, तुहूँ मोर भैया।
हमरो सनेसवा लेले जाऊ गे गोरियो ॥ ॥४॥
तोहर भैया के चिन्हेलों ना जानेलों।
कैसे कहब समुझाय गे गोरियो ॥ ॥५॥
हमरा भैया के लाँब लाँब केसिया।
जैसे लागे मुगल पठानवा गे गोरियो ॥ ॥६॥
आगु आगु आवेला बढ़नि बोझैवा।
पाछु लाग आवे जेठा भैया। गे गोरियो ॥ ॥७॥

The Same

1. Morning dawned and the cuckoo sings; up rises the nut-brown maid and sweeps the courtyard. (O fair one!)

2. In the sweeping her broom broke, and for the broom great sorrow was there (in her heart). (O fair one!)

3. Her mother-in-law went about[77] the courtyard and abused her,[78] "You daughter-in-law, wife of my son,[79] you eater of your father, eater of your brother." (O fair one!)

4. For the sake of the broom she became mournful (O fair one!) (and cried) "O wayfarer on the way! Thou art my brother: carry news of me (to my elder brother)." (O fair one!)

5. "Your brother I nor recognize nor know: how shall I tell him and explain." (O fair one!)

6. "My brother has long, long hair, as if he were a Mughal or a Pathán. (O fair one!)

7. Before him comes a carrier of a load of brooms, behind whom comes my elder brother." (O fair one!)

I conclude with a few songs of miscellaneous character:

[77] घोरिये poetical for घोरि = Hindi घूर कर के.
[78] गारी पारल is the ordinary phrase for 'to abuse'. It is literally 'to throw abuse'.
[79] पुतह and बहोरी both mean 'a son's wife'.